

Dr. Ramendra Kumar Singh  
Assistant Professor  
P.G. Dept. of Psychology  
Maharaja College, Arrah

B. A. - I (Psychology Hons.)  
Paper - II (Abnormal Psy.)  
रोगी - केन्द्रित चिकित्सा विधि  
(Client - Centered Therapy)

## Client - Centered Therapy

इस चिकित्सा विधि का प्रतिपादन कार्ल रोजर्स (Carl Rogers) के द्वारा किया गया था। इसीलिए इसे Rogers's therapeutic technique भी कहा जाता है। इसको रोगी-केंद्रित चिकित्सा विधि (Client Centered therapy) भी कहते हैं, इसमें उपचार के दौरान रोगी सलाहकार की अपेक्षा अधिक सक्रिय रहता है। इसको Person - centered therapy के नाम से भी पुकारा जाता है। इस चिकित्सा विधि में रोगी को 'Client' तथा चिकित्सक को Counsellor कहा जाता है।

यह विधि इस सिद्धान्त पर आधारित है कि प्रत्येक व्यक्ति को अपनी समस्याओं का समाधान करने की अन्तःशक्ति (Potentiality) होती है, जिसको जगाना और क्रियाशील करना चिकित्सक का कार्य है।

इस विधि के अनुसार सलाहकार का कार्य रोगी की समस्या का समाधान करना नहीं है बल्कि ऐसी वास्तविक एवं मनोवैज्ञानिक परिस्थिति उत्पन्न करना है जिसमें रोगी अपनी समस्या, वातावरण की जटिलता तथा अपनी बौद्धिक शक्ति को समझते हुए अपनी समस्याओं का समाधान स्वयं कर सके। सलाहकार का यह भी काम है कि वह ऐसी परिस्थिति उत्पन्न करे जिसमें रोगी अपनी वास्तविकता को सही रूप से समझे एवं संवेगान्मक रूप से स्वीकार करे, तभी रोगी सही माने में समस्या से मुक्ति पा सके।

रौजर्स का कहना कि सलाह की सभी विधियाँ मनोविश्लेषणात्मक स्वरूप की होती हैं, इसलिए सलाहकार को मानवीय प्रेरणा एवं इसकी मनोवैज्ञानिक पहलुओं का सही एवं वृद्ध ज्ञान रहना अनिवार्य है।

Freud के मनोविश्लेषणात्मक चिकित्सा (Psychoanalytical therapy) के समान इसमें सलाहकार रोगी के भूत (Past life) तथा भविष्य को महत्वपूर्ण नहीं मानता, वह वर्तमान को महत्वपूर्ण मानता है। इसमें सलाहकार प्रतिरोध (resistance) तथा स्थानान्तरण (transference) जैसी चीजों को महत्व नहीं देता है। ऐसी परिस्थिति जब कभी आ ही जाती है तो सलाहकार Client के सम्बंधित feelings का अर्थ स्पष्ट कर देता है।

Rogers ने इस चिकित्सा विधि में निम्नलिखित चरणों का महत्वपूर्ण माना है —

(i) प्रारम्भ में Client अपने negative feelings को व्यक्त करता है। यहाँ Counsellor भी अपने भाव-भंगिमा से ऐसा वातावरण उत्पन्न करता है कि Client अपने negative feelings को व्यक्त कर सके।

(ii) चिकित्सा के दौरान जैसे-जैसे negative feelings समाप्त होते हैं, वैसे-वैसे positive feelings का आगमन होता है। सलाहकार इन्हीं व्यनात्मक भावों को मजबूत करता है ताकि रोगी में आत्म-व्यक्त (Self-actualization) की प्रेरणा विकसित हो सके।

(ii) जैसे-जैसे रोगी में धनात्मक या स्वीकारात्मक भावों की अभिव्यक्ति होती है अर्थात् इसकी प्रबलता बढ़ती जाती है, clients में अपनी समस्याओं को समझने की शक्ति तथा उसपर उसकी फास की शक्ति बढ़ जाती है। परिणामतः वह बौद्धिक एवं सांवेगिक रूप से अपनी कमजोरियों में सुझ विकसित कर लेता है और अपनी कठिनाइयों के कारणों को दूर करने के लिए तैयार हो जाता है।

### गुण —

(i) साधारण रूप से maladaptive behaviour के उपचार के लिए इस विधि की अधिक उपयोगी माना गया है।

(ii) रोगी समस्या के समाधान में अधिक सक्रिय रहता है जिसके कारण रोगी का उपचार स्थाई रूप से होता है।

(iii) यह विधि समस्या समाधान से अधिक रोगी के आत्म-निर्मिता एवं सुझ के विकास में अधिक ध्यान देता है।

### दोष —

(i) यह विधि dysfunction से ग्रसित रोगियों के उपचार के लिए उपयोगी नहीं है।

(ii) इसमें रोगी के अचेतन मन को महत्व नहीं दिया जाता है, जिससे इसका उपचार सतही होता है।